"तमस" में चित्रित विभाजन की समस्या

* * राजनीतिक समस्या :

मार्च १९४७ से अगस्त १९४७ के बीच सर्वसामान्य व्यक्तियों की जो असह्य स्थिति हुई। विभाजन के नामपर जो अत्याचार हुए, साम्प्रदायिक शक्तियाँ जिसप्रकार कार्य कर रही थीं तथा अंग्रेजों की जैसी राजनीति चली और भारतीय धर्म की अंधाधुंध स्थिति रही इन सबको पाँच दिनों की घटनाओं द्वारा "तमस" में प्रस्तुत किया गया है।

६: मार्च १९४७ को विभाजन को रोकने के लिए बहुसंख्यकों के आधारपर पंजाब और बंगाल का विभाजन करके दो प्रान्तों के निर्माण की योजना काँग्रेस रख चुकी थी। परन्तु इस योजना को मुस्लिम - लीग अस्वीकार कर चुकी थी। और इसकी प्रतिक्रिया दिल्ली से दूर एक मुस्लिम - बहुल जिले में हुई। हिन्दुओं के प्रति मुसलमानों को भड़काया जा रहा था। साम्प्रदायिक शक्तियाँ इसे और अधिक उभार रही थीं। "तमस" में वर्णित इस जिले में कुल ६: शक्तियाँ कार्य कर रही थीं। इनमें से कुछ शक्तियाँ एक - दूसरे के विरोध में खड़ी थीं तो कुछ एक - दूसरे के सहयोग में हिन्दु - मुस्लिम फिसादों के समय सारे देश में यही ६: शक्तियाँ कार्यरत थीं।

देश का विभाजन जिस साम्प्रदायिक विद्वेष का परिणाम था, उसका बीज ब्रिटिश कुटनीति ने बोया था। अंग्रेजों ने यह पहले ही समझ लिया था कि, हिन्दुओं और मुसलमानों को आपस में लड़ाकर ही वे इस देश पर शासन कर सकते हैं। ब्रिटिश कुटनीति को पहली सफलता सम्प्रदायवादी मुसलमानों और हिन्दुओं को राष्ट्रीय काँग्रेस से अलग स्वतंत्र राजनीतिक दलों के रूप में प्रतीत करने में मिली।

किसी एक धर्म के लोगों को भड़कानेवाला कारण चाहे छोटा हो चाहे बड़ा, दूसरे धर्म के लोग उसका बदला लेने के लिए उतावले होकर तुरन्त कारवाई करते हैं। मस्जिद की सीढ़ियोंपर मरा हुआ सूअर फेंका गया है। उसका प्रतिशोध किसी गाय को मारकर लिया जा सकता है, यही सोचकर किसी ने एक गाय को मारकर हिन्दुओं के महत्त्वपूर्ण स्थानपर फेंक दिया। इससे

भारतीयों की धार्मिक अंध भावुकता स्पष्ट होती है। इन घटनाओं के कारण शहर में चारों तरफ अफवाहें और आतंक छा गया। सारा वातावरण बदल गया। तब शहर की इस स्थिति को देखकर कांग्रेस तथा अन्य पार्टियों के लोगों ने डिप्टी कमिश्नर से मिलकर इस स्थिति को काबू में लाना जरूरी समझा, वे रिचर्ड से मिलने गये पर रिचर्ड इस संबंध में कुछ भी करना नहीं चाहता तब उनकी पत्नी फसाद को रोकने के लिए कहती है तो वह कहता है, - "हम इनके धार्मिक झगड़ों में दखल नहीं देते।"[1] जब कांग्रेसी नेता बख्शीजी कहते हैं शहर की रक्षा तो आप ही की जिम्मेदारी है।" तो रिचर्ड कहता है, "ताकत तो इसवक्त पंडित नेहरू के हाथ में है।"[2] तथा वह अन्य पर्याय, जैसे फौज बिठाना, कर्फ्यू लगाना, एक हवाई - जहाज तक उड़ाना रिचर्ड स्वीकार नहीं करता। जब वह कहता है कि मेरे अधीन कुछ भी नहीं है तो, बख्शी जी कहते हैं, "आपके अधीन सबकुछ है साहब, अगर आप कुछ करना चाहें तो।"[3] अंग्रेजों की कूटनीति को लेखक ने यहाँ स्पष्ट किया है।

आरम्भ से अंग्रेजों की नीति यह स्पष्ट करती है कि, दो सम्प्रदायों को लड़ाने में ही वे खुद को सुरक्षित समझते हैं। - "प्रजा अगर आपस में लड़े तो शासक को किस बात का गुजारा है?"[4] "यह देखना निहायत जरूरी था कि जनता का असंतोष ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध न भड़के।"[5] "हुकूमत करनेवाले यह नहीं देखते कि, प्रजा में कौनसी समानता पाई जाती है, उनकी दिलचस्पी तो यह देखने में होती है कि वे किन - किन बातों में एक - दूसरे से अलग हैं।"[6] इन विविध वक्तव्यों से स्पष्ट है कि यह शक्ति दो धर्मों के तनाव को कम नहीं करना चाहती थी।

फिसाद छिड़ने के बाद मण्डी में आग लगी तब रात को खतरे की घण्टी बजने लगी। घण्टी की भयावह आवाज डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड भी नींद में सुन रहे थे। उनकी पत्नी उनसे बार - बार कह रही है कि वह फिसाद को रोके। परन्तु रिचर्ड का एक ही तर्क है कि हम उनके धार्मिक झगड़ों में दखल नहीं देते। तब लिजा कहती है, - "ये लोग आपस में लड़ें, क्या यह अच्छी बात है?"[7] रिचर्ड कहता है, "क्या यह अच्छी बात होगी कि ये लोग मिलकर मेरे खिलाफ

लड़ें, मेरा खून करें ?"[८] अंग्रेज यह जान चुके थे कि जब तक ये लोग आपस में लड़ेंगे तब तक हमें कोई खतरा नहीं है। परन्तु जैसे ही यह आपस में लड़ना छोड़कर एक हो जाएँगे, खतरा हमें है। इसलिए वे तटस्थता की भूमिका अपना रहे थे। यह सुन लिजा सोचती है, "जैसे मानवीय मूल्यों का कोई महत्त्व नहीं होता, वास्तव में महत्त्व केवल शासकीय मूल्यों का होता है।"[९] रिचर्ड के उपर्युक्त वाक्य से लेखक ने अंग्रेजों में मानवीय मूल्यों का विघटन दिखाया है।

* * साम्प्रदायिक समस्या :

किसी एक धर्म के लोगों को भड़काने-वाला कारण चाहे छोटा हो चाहे बड़ा, दूसरे धर्म के लोग उसका बदला लेने के लिए उतावले होकर तुरन्त कार्रवाई करते हैं। मस्जिद के सामने कोई मरा हुआ सूअर फेंका गया है। उसका प्रतिशोध किसी गाय को मारकर लिया जा सकता है। यही सोचकर किसीने एक गाय को क़त्ल करके हिन्दुओं के महत्त्वपूर्ण स्थान पर फेंक दिया। इसतरह लेखक ने हिन्दु- मुसलमान लोगों की अन्ध धारणाओं को चित्रित किया है।

"तमस" में लेखक ने लोगों की कट्टर धर्मान्धता, वर्गभेद, जातीयता, इसके परिणामस्वरूप विभिन्न राजनीतिक पार्टियाँ, संघटनों तथा संस्थाओं का निर्माण तथा उनके पारस्परिक वैमनस्य, संकीर्ण विचारधारा, पक्षपातपूर्ण रवैयों का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है।

महात्मा गांधी जी के नेतृत्त्व में विकसित कांग्रेस अपने तरीके से विभाजन का विरोध कर रही थी। जब दंगे बढ़ने लगे, हिन्दुओं को नुकसान पहुँचने लगा तब सामान्य कांग्रेसी कार्यकर्ताओं का विश्वास अहिंसा से उठता गया। मुस्लिम - लीग के जबरदस्त प्रचार के सामने ये अकेले पड़ते गये। मुस्लिमों के मन में यह बात बैठ गई थी कि कांग्रेस हिन्दुओं की संस्था है।" जो मुसलमान कांग्रेस में थे उनको सर्वाधिक तकलीफ हुई, बख्शीजी इसके प्रमाण हैं।

विभाजन के निर्णय के बाद तो पूर्वी पंजाब के कांग्रेसी सर्वाधिक हतबल हो गये। साम्प्रदायिक शक्तियाँ और हिंसा के सम्मुख गांधी जी के सिद्धान्त पराजित हो गये। फिर भी आखरी समय तक फसादों को रोकने की कोशिश कांग्रेसी कर रहे थे।

मुस्लिमों के हित के लिए सन् १९०६ ई. में लीग की स्थापना हुई। कट्टर मुस्लिम अपने हित के लिए लीग के झण्डे के नीचे आ गये सन् १९४० ई. तक आते - आते मुस्लिम बहुसंख्यक प्रान्तों में सभी स्तरोंपर लीग की स्थापना हुई। लीग कॉंग्रेस को हिन्दुओं की संस्था मानते थे, कॉंग्रेस की नफरत से ही उभरी थी। कट्टर साम्प्रदायिक शक्ति के रूप में उभरी लीग की इसी कट्टरता के कारण पंजाब के हिन्दुओं को जबरदस्त नुकसान पहुँचा तो दूसरी ओर पंजाब तथा पश्चिम बंगाल के मुस्लिमों को भी काफी नुकसान उठाना पड़ा।[10]

मुस्लिम लीग और कॉंग्रेस के पारस्परिक विरोध के कारण साम्प्रदायिक दंगे हुए। "तमस" में लेखक ने बख्शीजी और हयातबख्श के माध्यम से कॉंग्रेस और मुस्लिम - लीग का विरोध उजागर किया है। देश विभाजन के कुछ महीने पूर्व से ही वातावरण इतना तनावपूर्ण हो गया था कि कॉंग्रेस की धर्म निरपेक्षता और रचनात्मक कार्य तक को मुस्लिम लीग संदेह की दृष्टि से देखती थी। जैसे, प्रभातफेरी के लिए कॉंग्रेस जनों की मण्डली जा रही थी। उनमें से किसी ने नारा लगाया - कौमी नारा - वन्दे मातरम - बोलो भारत माता की जय। कुछ ही पल में गली के नुक्कड़पर तीन आदमी नारे लगाने लगे, - पाकिस्तान - जिन्दाबाद - कायदे आजम जिन्दाबाद।

कट्टर मुस्लिम महमूद लिगी उस कॉंग्रेस मण्डली को ललकारता आगे आया - "कॉंग्रेस हिन्दुओं की जमात है। इसके साथ मुस्लिमों का कोई वास्ता नहीं है।"[11] जब बख्शी जी ने कहा - "आजादी सब के लिए है, सारे हिन्दुस्तान के लिए है।"[12] महमूद का उत्तर था - "हिन्दुस्तान की आजादी हिन्दुओं के लिए होगी, आजाद पाकिस्तान में ही मुसलमान आजाद होंगे।"[13] उपर्युक्त वाक्य से लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि, फसाद को भड़काने के लिए यह कट्टर धर्मान्ध लोग कैसे बढ़ावा देते थे।

उन दिनों कॉंग्रेस दल की स्थिति अत्यन्त विचित्र थी। एक ओर मुसलमान उसे केवल हिन्दुओं का दल समझते थे, हिन्दू समझते थे कि कॉंग्रेस ने मुस्लिमों को सिर पर चढ़ा रखा है। देश का सबसे बड़ा राजनीतिक दल कॉंग्रेस था और उसका प्रतिद्वन्द्वी दल मुस्लिम लीग था, जिसे अधिकांश मुसलमानों का समर्थन प्राप्त था जब तक कॉंग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों बड़े दल मिलकर बैठते नहीं, तब तक शान्ति बनाये रखना सम्भव नहीं था।

विभाजन के पाप के भागीदार कम्यूनिस्ट भी हैं। परन्तु इन्होंने हिन्दु - मुस्लिम एकता के लिए काफी प्रयत्न भी किए। कम्यूनिस्टों का उन विषय परिस्थितियों में भी यह प्रयास रहा कि मजदूरों में साम्प्रदायिक दंगे न भड़कें। इसलिए मजदूर बस्तियों में कम्यूनिस्ट कामरेड भेजे गये थे कम्यूनिस्ट कामरेड सन् १९४७ ई. के समय लाहौर, अमृतसर, पंजाब आदि शहरों में अनेक मुहल्लों मे जा-जाकर शान्ति बनाये रखने का सुझाव देते थे, "हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम लोगों को मुसलमानों के खिलाफ भड़काया जा रहा है। हम झूठी अफवाहें सुनकर एक दूसरे के खिलाफ तैश में आ रहे हैं।"[१४]

ऐसी स्थिति में फसादों को रोकने के लिये कम्यूनिस्ट दल आगे आता है। इस दल ने फसादों को रोकने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। "तमस" में मुस्लिम - लीग और कांग्रेसी नेताओं को परस्पर मिलाने और बैठकर बातचीत करने के लिए तैयार करने का प्रयत्न कम्यूनिस्ट पार्टी का देवदत्त कहता है। "शहर में दंगों को रोकने के लिए एक बार फिर कांग्रेस और मुस्लिम लीग के लीडरों को इकट्ठा करना होगा। हयातबख्श और बख्शी को आपस में मिलाना होगा।" [१५]

कांग्रेस और लीग के स्थानीय नेताओं की हठधर्मियों के बावजूद कम्यूनिस्ट कार्यकर्ताओं ने दोनों पार्टियों के नेताओं को मिटिंग के लिए एक स्थान पर लाने के प्रयास जारी रखे। असाधारण परिस्थिति के कारण कांग्रेस के दफ्तरपर ताला लगा रहता था। लिगी नेताओं के कोई कम्यूनिस्ट मिलने जाता तो वे बातचीत से पूर्व ही पाकिस्तान के पक्ष में नारे लगाने लगते। - उनकी पहली मांग यह होती कि, पहले कांग्रेसवाले कबूल करें कि कांग्रेस हिन्दुओं की जमात है। उसके बाद वे कांग्रेसियों के साथ बैठेंगे दोनों दलों के नेताओं को मिलाना कठिन कार्य था फिर भी कामरेड देवदत्त ने उन दोनों को आपस में मिलाया। सबने अमन की अपील पर दस्तखत किए। महत्त्व की बात यह है कि, अमन की अपील पर दस्तखत करने के बाद वहाँ उपस्थित लिगियों ने पाकिस्तान - जिन्दाबाद के नारे लगाये।

६५

कम्यूनिस्ट दल के कार्यकर्ता दंगों को रोकने के लिए केवल शहर तक ही अपनी गतिविधी सीमित नहीं रखते थे, वे ग्रामीण क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं। सैय्यदपुर गाँव में सिक्खों और मुसलमानों में तीन दिन तक जमकर लड़ाई हुई। कामरेड सोहनसिंह वहाँ उपस्थित रहा और फसादों को रोकने का प्रयत्न करता रहा। जिसप्रकार कम्यूनिस्ट फसादों को रोक नहीं सके उसीप्रकार अहिंसा सिद्धान्त को अत्यंत महत्त्व देनेवाले काँग्रेसी नेता भी रोक नहीं पाये।

आर्य - समाज की स्थापना सामाजिक सुधार एवं धार्मिक पुनरुत्थान के लिये हुई। शिक्षा एवं सामाजिक क्षेत्र में आर्यसमाज का कार्य महत्त्वपूर्ण रहा है। धार्मिक क्षेत्र में इनका कार्य बड़ा ही उत्कृष्टपूर्ण रहा था। उन्होंने केवल अंग्रेजों के विरुद्ध ही जनमत तैयार नहीं किया बल्कि, धार्मिक पुनरुत्थान के नाम पर हिन्दु - संगठन का आग्रह रखा, हिन्दुओं की महानता पर बल दिया और अन्य धर्मों को तुच्छ समझा। इसी वृत्ति के कारण यह मुस्लिमों की विरोधी शक्ति के रूप में उभर पड़ा। मुस्लिमों में भी इसका प्रत्युत्तर देनेवाली "वहाबी तहरीक" नाम की शक्ति उभर पड़ी। परिणामत: तनाव अधिक बढ़ने लगा।

पंजाब के विभाजन का सर्वाधिक विरोध सिक्खों ने किया इनके विरोध से साम्प्रदायिक शक्तियाँ अधिक उभरीं। वे शक्तियाँ इस संकट को तीन सौ वर्ष पहले लड़े गये धर्मयुद्ध के साथ जोड़ रहे थे। अल्पमत होने पर भी मुस्लिमों से टकराने की सिक्खों ने हिम्मत की। वे इस समस्या को विवेक और तटस्थता से न देख केवल युद्ध के स्तरपर देखते रहे। परिणामत: नफरत की आग अधिक बढ़ती गयी। - लेखक ने इसपर टिप्पणी करते हुए ठीक ही कहा है - " लड़नेवालों के पाँव बीसवीं सदी में थे, सिर मध्ययुग में।" [१६]

मुस्लिम - लिग, आर्यसमाज, सिक्ख समाज अपनी सम्पूर्ण कट्टरता के बावजूद एक बिन्दुपर निकट आते हैं, वह है - धर्म का राजनीति के लिए उपयोग। इसमें ही दंगे बढ़ते गये।

"तमस", भारतीय जनता में स्थित जातीयता, वर्गभेद, धार्मिक कट्टरता, अन्धराष्ट्रवाद का चित्रण और उनके भयावह परिणामों को दर्शाता है।

** १. जातीयता :-

"तमस" में जातीयता और वर्गभेद सम्बन्धी समस्याओं का चित्रण हुआ है। लेखक ने हिन्दु - मुस्लिम विद्वेष को बड़ी मार्मिकता से चित्रित किया है। उसवक्त आर्य - समाज का धार्मिक पुनरुत्थान के नाम पर हिन्दु - संगठन का आग्रह, हिन्दुओं की महानता पर बल व अन्य धर्मों को तुच्छ समझने की प्रवृत्ति के कारण आर्य-समाज मुस्लिमों की विरोधी शक्ति के रूप में उभर आया। उधर मुस्लिमों में इसी प्रकार का कार्य "वहाबी तहरीक" द्वारा शुरू हुआ। परिणामत: तनाव बढ़ने लगा।

आतंक के कारण हिन्दु - मुस्लिम मुहल्लों के बीच लीकें खींच गई थीं, हिन्दुओं के मुहल्लों में मुसलमानों को जाने की हिम्मत नहीं थी और मुसलमानों के मुहल्लों में हिन्दु - सिक्ख अब आ - जा नहीं सकते थे। एक - दूसरे की आँखों में संशय और भय उतर आये थे।" [१७] फसाद होने के बाद हिंसा से लोग इतने आंतकित हो गये थे कि जिस इलाके में मुसलमानों की अक्सरियत थी, वहाँ से हिन्दु - सिक्ख निकलने लगे थे और जिन इलाकों में हिन्दु सिक्खों की अक्सरियत थी, वहाँ से मुसलमान निकल जा रहे थे। अभी पाकिस्तान बना नहीं था, पर हिंसा, लूट, आगजनी आदि को देखकर लोगों को यह दृढ़ विश्वास हो गया था कि अब हिन्दुओं के मुहल्ले में न कोई मुसलमान रहेगा। और न मुसलमानों के मुहल्ले में कोई हिन्दु। इसतरह "तमस" में हिंसा, लूट, आगजनी आदि द्वारा जातीयता की उभरती भावना को चित्रित किया है। लेखक ने "तमस" में यह प्रयास किया है कि विभाजन के समय मानवीय मूल्यों का कैसे -ह्रास हुआ था।

**२. देश - विभाजन और अन्धराष्ट्रवाद :-

"तमस" में हिन्दु - मुस्लिमवाद के जरिये देशविभाजन के पूर्व की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों पर प्रकाश डाला गया है। आर्य - समाजी हिन्दु धर्म के झूठे अभिमान को बढ़ाते रहे वे बताते रहे कि, वेदों में सबकुछ है, दुनिया के सब धर्म गलत हैं। इससे दोनों सम्प्रदायों में नफरत बढ़ती गई। गोल्डा शरीफ के पीर इसी साम्प्रदायिकता का प्रतिनिधित्व करते हैं। "पीर साहब काफिरों को हाथ नहीं लगाते, काफिरों से नफरत करते हैं।" [१८]

सिक्ख धर्म का इतिहास मुस्लिमों के संघर्ष के साथ जुड़ा हुआ है। इसलिए मुस्लिमों के विरोध में लड़ना वे अपना धार्मिक कर्तव्य समझते हैं।" लेखक ने इस स्थिति को स्पष्ट करने के लिए स्थान - स्थान पर उचित ही कहा है, "तीन सौ साल पहले भी ऐसा ही गीत दुश्मन से लोहा लेने के लिये गाया गया था। . . . . . संगत का प्रत्येक सिंह सिर हथेली पर रख बैठा था।" [१९] आज फिर से खालसा पंथ को गुरु के सिंहों के खून की जरूरत है।" [२०]

इसी अन्धराष्ट्रवाद तथा अविवेकी दृष्टि के कारण दो दिन और दो रातें ये लगातार लड़ते रहे। इन लोगों के मन में १६ वीं शती की संकुचित जहनियत कार्य कर रही थी उनकी मानसिकता को लेकर लेखक ने कहा है, "लड़ने वालों के पाँव बीसवीं सदी में थे और सर मध्ययुग में।" [२१] लेखक ने देशविभाजन के समय सिक्ख - मुस्लिम तथा हिन्दुओं में स्थित लोगों की धार्मिक कट्टरता को स्पष्ट किया है।

** ३. अमानवीयता :-

हिन्दु - मुस्लिम, सिक्ख लोगों में संकुचित विचारधारा व्याप्त होने के कारण ये आपस में लड़ते रहें। किसी ने यह जानने की कोशिश नहीं की कि, सुअर को मारा किसने ? मस्जिद की सीढ़ियोंपर लाकर फेंका किसने ? इसके कारण ही मनुष्य का अमानवीय तथा

ध्वंसात्मक रूप अधिक उभर पड़ा। इस अमानवीय रूप के कारण ही मण्डी में आग लगा दी गई थी, लाखों का नुकसान हुआ था। इस घटना से पूरे शहर की मानसिकता बिगड़ गयी थी। सब एक दूसरे के लिये अजनबी बन गए थे। सब में संशय और नफरत भरा हुआ था। विवेक की शक्तियाँ नष्ट हुई थीं, और अब बच गयी थी केवल आर्यवीर दल और लिगियों की संकुचित सम्प्रदायवादी विचारधारा। आर्यवीर दल नौजवानों को छुरे भोंकने और लाठियाँ चलाने की शिक्षा दे रहा है, तो लिग हिन्दुओं को लूटने की योजना बना रहा है। इस कुशिक्षा का परिणाम ही रणवीर, मासूम गरीब इत्रफरोश का कत्ल करता है।

इत्रफरोश की तरह कॉंग्रेसी जरनैल, सोहनसिंह आदि की हत्या तथा जसबीर और अन्य सिक्ख महीलाओं का अपने बच्चों के साथ कुएँ में डूबकर मरना आदि प्रसंगों में मनुष्य का अमानवीय साम्प्रदायिक रूप दिखाई देता है।

देश विभाजन के समय शासकों की भूमिका अमानवीय रही। सरकार का प्रतिनिधी डिप्टी कमिश्नर अगर चाहता तो फसाद को रोक सकता था। रिचर्ड अंग्रेजों का हित देखता है, फसाद को रोकने की क्षमता होते हुए भी जान-बूझकर निष्क्रिय रहता है। उस रात जब मण्डी जल रही थी, खतरे की घंटी बज रही थी, तब भी रिचर्ड आराम से नींद ले रहा था। उसके सामने मानवीय मूल्यों की कोई कीमत नहीं थी, केवल शासकीय मूल्यों का ही महत्त्व था।

रिचर्ड कुएँ में औरतों और बच्चों के डूब जाने की घटना को अपने लिये कौतूहल का विषय मानता है। उसके लिये यह दुर्घटना स्थल एक रोमांचकारी पिकनिक स्थल का रूप ले लेता है। वह अपनी पत्नी लिजा से कहता है कि, वहाँ सैर के लिये चला जाए।

लिजा पूछती है कि, १०३ गाँव जल जाएँ तो भी क्या तुम भावुक नहीं बनोगे। रिचर्ड कहता है "तो भी नहीं, यह मेरा देश नहीं है, न ही ये और मेरे देश के लोग हैं।"[२२] "तमस" में लेखक साहनी जी ने विभाजन के समय राजनीतिक लोगों में स्थित निर्ममता को स्पष्ट किया है।

**४. साम्प्रदायिकता और पूँजीवाद :-

"तमस" में लेखक ने शाहनवाज जैसे पूँजीपति का चित्रण किया है, जो फिसाद के वक्त अपने हिन्दु मित्रों को जैसे लाला लक्ष्मीनारायण तथा रघुनाथ की खूब सेवा करता है, उन्हें सुरक्षित स्थान पर पहुँचाता है, क्योंकि वे पूँजीपति हैं। शाहनवाज के मनमें भी छुपीत साम्प्रदायिक भावना है, जो मिल्खी के प्रति व्यवहार से दिखाई देती है। रघुनाथ की पत्नी पूँजीपति शहानवाज को धन्यवाद देती है लेकिन उनके ही घर की रक्षा करनेवाला, उनका सुख दुःख का साथी मिल्खी जख्मी होता है तो बहाने बनाकर उसको लाना टालते हैं।

लेखक ने यहाँ पूँजीवाद तथा साम्प्रदायिकता के द्वारा समाज की खोखली अध्यात्मिकता को स्पष्ट किया है। विभाजन के समय पूँजीपति लोग अपनी आर्थिक सुरक्षा के कारण एक - दूसरे से मैत्री बनाये रखते हैं।

** ५. गरीब लोगों की जान पर राजनैतिक खेल :-

अमीर लोग सिर्फ अपनी आर्थिक सुरक्षा देखते हैं, इसके लिये वे एक दूसरे की हत्या तक करते हैं॥ लेकिन गरीब लोग जो इन बातों से एकदम नासमझ होते हैं वे इन लोगों की स्वार्थ का शिकार बनते हैं। शाहनवाज हिन्दू मित्रों के परिवारों की रक्षा करता है, पर हिन्दू से घृणा करता है। जब शाहनवाज रघुनाथ की पत्नी के कहनेपर उनके घरसे गहनों का डिब्बा लेने जाता है तब उनके नौकर मिल्खी को देखकर उसकी चोटी देखकर उसकी हिन्दुविषयक घृणा उभर आयी और उसने मिल्खी को लात मारी मिल्खी सीढ़ियों से गिरा उसका माथा फूटा, पीठ टूट चुकी थी।

नत्थू इस उपन्यास का एक गरीब असहाय्य पात्र है। पहले वह मुअर को मारने तैयार नहीं होता लेकिन मुरादअलि उसे पाँच की नोट थाम देता है, इससे नत्थू इस काम के लिये विवश होता है, वह अमीरों की राजनैतिक चाल को जानता नहीं था, अंत में नत्थू इस मानसिक कुण्ठा से मर जाता है। लेखक ने यहाँ यह दर्शाया है कि, फसादों में आम आदमी ही मारा जाता है। जैसे, इन्द्र द्वारा इक्बालरोशन की हत्या। - इक्बालरोशन इतना गरीब है कि, वह दंगे के दिन भी दो - चार आने के जुगाड़ के लिये घर से निकल पड़ा था।

विभाजन के समय असंख्य गरीब, असहाय्य लोगों की हत्या हुई थी उनमें और एक व्यक्ति है जरनैल। जरनैल एक गरीब, सनकी आदमी था, वह गांधीजी का सच्चा सिपाही था, अमन और एकता के लिये वह अंतिम साँस तक संघर्ष करता रहा।

इसतरह लेखक ने "तमस" में शाहनवाजद्वारा मिल्खी की हत्या, इन्द्रद्वारा इक्बालरोशन की हत्या तथा धर्मपरिवर्तन में इकबाल सिंह की असहाय्यता दिखाकर गरीब असहाय्य लोगों की जानसे यह अमीर राजनैतिक लोग कैसे खिलवाड़ करते हैं यह दर्शाया है।

** ६. युवापिढ़ी की समस्या :-

"तमस" में,लेखक ने दिशाहीन युवावर्ग के बारे में अपने विचार व्यक्त किये हैं। लेखक ने आर्यवीर दल और लिगियों के द्वारा युवापिढ़ी को दी जानेवाली शिक्षा तथा उसका बिना विचार किये ग्रहण करनेवाली युवापिढ़ि का चित्रण किया है। उसवक्त के युवकों में क्या करना चाहिये और क्या नहीं इतना सोचने तक की समझ नहीं थी, औरों के बताये हुये मार्ग पर चलना ही उनका धर्म था। इसीकारण आर्यवीर दल युवकों को छुरे भोंकना, लाठियाँ चलाना आदि की शिक्षा दे रहा था, तो लिग हिन्दुओं को लूटने की योजनायें बना रहा था और इसी कुशिक्षा का परिणाम स्वरूप रणवीर गरीब, असहाय्य इक्बालरोशन का खून करता है।

वातावरण का प्रभाव सामान्य व्यक्ति पर होता ही है, रणवीर और देवव्रत भी इसीकारण मनुष्यता के विरूद्ध आचरण करने लगते हैं। इसतरह लेखक ने यह बताया है कि, यह सम्प्रदायवादी लोग ही धर्म के नाम पर इस युवापिढ़ी को गुमराह कर रहे हैं। लेखक ने यहाँ आज देश में व्याप्त इसी समस्या को उभारने का प्रयत्न किया है।

**. ७. अफवाहें और आतंकता :-

उन दिनों अफवाहों की अधिकता थी। अफवाहें तेजी से चारों ओर फैलती थीं। और उसका दुष्परिणाम भी तुरन्त प्रकट होता था। कॉंग्रेस की प्रभात - फेरी मण्डली जब नालियाँ साफ कर रही थी तब एक वयोवृद्ध मुसलमान ने उस मण्डली के कार्य की प्रशंसा की थी, मृत सूअर को मस्जिद की सिढ़ियोंपर रखे जाने की अफवाहें सुनकर, उस वृद्ध मुसलमान का मण्डली के प्रति व्यवहार एकदम बदल गया।

अफवाहों और आत्मरक्षा के बारे में विचार करने के लिये हिन्दुओं की अंतरंग सभा की बैठक हुई। अफवाह थी कि जामा मस्जिद में लाठियाँ, भाले और तरह-तरह का असला इकट्ठा किया जा रहा है। अधिकांश हिन्दुओं का विश्वास था कि सरकार स्थिति पर काबू पा लेगी। फिर भी अफवाहों पर विश्वास करते हुए हिन्दुओं ने अपने युवकों को लाठी चलाना सिखाने की आवश्यकतापर बल दिया। सिक्खों का नेता तेजासिंह संगत को बताता है कि यहाँ के मुसलमानों ने मुरीदपुर के मुसलमानों को असला लेकर पहुँचने का निमंत्रण भेजा है।

किसी नगर अथवा क्षेत्र में आतंक तब घूसने लगता है, जब अफवाहें विलक्षण रूप धारण कर लेती हैं और छुरेबाजी या हत्या की एकाध दुर्घटना हो जाती है। आतंक *व्याप्त* के कारण "मुहल्लों के बीच मानों रेखाएँ खींच गई हों। हिन्दुओं के मुहल्ले में मुसलमान को जाने की हिम्मत नहीं थी। और मुसलमानों के मुहल्ले में हिन्दु - सिख अब आ - जा नहीं सकते थे।" [२३]

उपन्यास में एक तथ्य यह भी स्पष्ट किया गया है कि एक - दूसरे के डर और आतंक के कारण सिख और मुसलमान दोनों असला इकट्ठा कर रहे थे । असला इकट्ठा करने में आतंक महत्त्वपूर्ण कारण था। मुसलमान सिक्खों के डरसे असला इकट्ठा कर रहे थे, और सिक्ख मुसलमानों के डर से मोर्चाबन्दी कर रहे थे। दूसरा तथ्य यह है कि, गाँव के व्यक्तियों ने अपने गाँव के ही विधर्मियों को मारने में पहल नहीं की। प्राय: दूसरे गाँव के लोगों ने, अपरिचित लोगों की हत्या और लूट - पाट करने में पहल की है।

** निष्कर्ष :-

देश विभाजन के समय राजनीतिक पार्टियों, साम्प्रदायिक दलों की संकीर्ण विचारधारा, पक्षपातपूर्ण वृत्ती तथा भारतीय लोगों में स्थित धर्मान्धता उसके परिणामस्वरूप अंग्रेजों की कुटनीति आदि का "तमस" यथार्थ रूप है।

लेखक ने "तमस" में ऐसे साम्प्रदायिक सम्बन्धों को प्रस्तुत किया है जिनमें बरसों से हिन्दु - मुस्लिम शान्ति से जीवन व्यतीत कर रहे थे, विभाजन के दिनों में वही सम्बन्ध धार्मिक भावनाओं के कारण मारकाट, आगजनी, लूटपाट, अपहरण, बलात्कार जैसे कुकर्मों में उलझे। साम्प्रदायिकता, समाज और राजनीति में जहर घोलने का काम कर रही थी। देश में जो भी दंगे फसाद हुये, देश के दो टुकड़े हुये ये सब इसी साम्प्रदायिकता के परिणाम है। साम्प्रदायिकता के कारण मनुष्य - मनुष्य न रहकर पशु बन जाता है। इसी पाशविकता के कारण सामाजिक आदर्शों का विघटन, नैतिक मूल्यों का पतन हुआ, गरीब जनता को शिकार होना पड़ा, अपने सगे - सम्बन्धियों तथा घर - बार आदि को छोड़कर एक अनिश्चित भविष्य की ओर निकलना पड़ा।

"तमस" भारतीय जनता में व्याप्त जातियता, वर्गभेद, राजनीतिक कट्टरता धर्मान्धता आदि का चित्रण उसके भयावह परिणामों को दर्शाता है। देशविभाजन के पूर्व हिन्दू - मुस्लिमवाद राजनीतिक और सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि, इस अन्ध-राष्ट्रवाद के पिछे इन लोगों के मन में १६ वी शती की संकुचित जहनियत किसप्रकार कार्य कर रही थी। इसवक्त अमानवीयता चरम सीमा पर पहुँची थी, लेखक ने इसे मण्डी में आग, दुकानों की लूट, इत्मरोश जैसे निर्दोष की हत्या, जरनैल सोहनसिंह की हत्या, जसबीर तथा अन्य सिख स्त्रियों द्वारा आत्महत्या आदि के चित्रण द्वारा स्पष्ट किया है।

धार्मिक एवं राजनैतिक अंधःकार में देश की संस्कृति का ह्रास किसप्रकार हुआ इसे स्पष्ट करते हुए लेखक ने राजनीति और धर्म के अन्तविरोध को स्पष्ट किया है। कट्टर धर्मान्धता का शिकार केवल गरीब मुसलमान, हिन्दू तथा सिख ही हुए थे इसे लेखक ने, इत्मरोश, रघुनाथ का नौकर मिल्खी तथा हरनामसिंह, बन्तो द्वारा प्रस्तुत किया है। रघुनाथ जैसा रईस ईस संकटग्रस्त स्थिति में भी सुरक्षित रहता है पर उसका गरीब नौकर मिल्खी उससे बच नहीं सकता। हरनाम सिंह बन्तो को भी इस ढलती उम्र में बेघर होना पड़ता है, इससे लेखक ने घृणीत साम्प्रदायिकता को स्पष्ट किया है।

"तमस" का अर्थ है अंधःकार। विभाजन के पूर्व भारत की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक परिस्थितियों में व्याप्त अंधःकार को लेखक ने प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित किया है। आज भी हिन्दू - मुस्लिम समस्या का अन्त नहीं हुआ है। जाति या धर्म के नाम पर देश का विभाजन किसप्रकार गलत था, यह प्रस्तुत करने का प्रयास "तमस" में किया है।

* * *

सन्दर्भ - सूची

१.	भीष्म साहनी,	"तमस",	राजकमल प्रकाशन,	द्वितीय संस्करण १९७७,	पृ. १२४
२.	भीष्म साहनी,	"तमस",			पृ. ८३
३.	भीष्म साहनी,	"तमस"	-"-	-"-	पृ. ८५
४.	भीष्म साहनी,	"तमस"	-"-	-"-	पृ. ५२
५.	भीष्म साहनी,	"तमस"	-"-	-"-	पृ. २५४
६.	भीष्म साहनी,	"तमस"	-"-	-"-	पृ. ४९
७.	भीष्म साहनी,	"तमस"	-"-	-"-	पृ. १२५
८.	भीष्म साहनी,	"तमस"	-"-	-"-	पृ. १२५
९.	भीष्म साहनी,	"तमस"	-"-	-"-	पृ. १२५
१०.	डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे,	"हिन्दी उपन्यास विविध आयाम,"			पृ. ३२९
११.	भीष्म साहनी,	"तमस",	राजकमल प्रकाशन,	द्वितीय संस्करण १९७७	पृ. ३५
१२.	भीष्म साहनी,	"तमस",	-"-	-"-	पृ. ३५
१३.	भीष्म साहनी,	"तमस",	-"-	-"-	पृ. ३५
१४.	भीष्म साहनी,	"तमस",	-"-	-"-	पृ. १९७
१५.	भीष्म साहनी,	"तमस",	-"-	-"-	पृ. १५१
१६.	भीष्म साहनी,	"तमस",	-"-	-"-	पृ. २३१
१७.	भीष्म साहनी,	"तमस",	-"-	-"-	पृ. १३७
१८.	भीष्म साहनी,	"तमस",	-"-	-"-	पृ. ११२
१९.	भीष्म साहनी,	"तमस",	-"-	-"-	पृ. १९०
२०.	भीष्म साहनी,	"तमस",	-"-	-"-	पृ. १९५
२१.	भीष्म साहनी,	"तमस",	-"-	-"-	पृ. २३१
२२.	भीष्म साहनी,	"तमस",	-"-	-"-	पृ. २५५
२३.	भीष्म साहनी,	"तमस",	-"-	-"-	पृ. १३७

000000000000000